उत्तरमाला

I

उत्तर- 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग)

4. राही अपनी विशेषताएँ गिनाता हुआ कहता है कि मैं अबाध हूँ अर्थात् किसी के रोके रुकने वाला नहीं हूँ। मैं विश्राम न करने वाला, कभी न थकने वाला और किसी भी प्रकार के बंधनों को स्वीकार करने वाला नहीं हूँ। मैं अन्य राहियों की तरह विवश और अपने मन को मारकर यात्रा करने वाला राही भी नहीं हूँ।

5. 'दोनों ही ओर निमंत्रण है- इस पार मुझे, उस पार मुझे' पंक्ति के माध्यम से कवि ने इस आध्यात्मिक तथ्य की ओर संकेत किया है कि यदि मैं भवसागर को पार नहीं कर पाया तो इस संसार में सुनहरा जीवन जीने का निमंत्रण मेरे पास है और यदि भवसागर को पार कर गया तो स्वर्ग के सुख भोगने का निमंत्रण मेरे पास है।

II

1.उत्तर : 'सांस्कृतिक अस्मिता से अभिप्राय है-अपनी संस्कृति की पहचान: वे संस्कारगत विशेषताएँ, जिनके कारण कोई व्यक्ति किसी समाज-विशेष का अंग माना जाता है। जैसे कि भारतीय संस्कृति की विशेष पहचान अर्थात् सांस्कृतिक अस्मिता है-हमारी वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, अतिथि सत्कार, शादी-विवाह के रीति-रिवाज और हमारी एकता, भाईचारा तथा सर्वधर्म समभाव आदि। आजकल भोगवाद की भावना इतनी प्रबल हो गई है कि हम अपनी सांस्कृतिक विरासतों को सँभालने से कतरा रहे हैं। इसीलिए हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का दिन-पर-दिन हास होता जा रहा है।

2.उत्तर : नम्से बौद्ध भिक्षु था। वह शेकर विहार नामक जागीर का प्रमुख भिक्षु था। जागीर-प्रमुख होने के कारण जागीर के निवासियों में उसका खूब सम्मान था। वह स्वभाव से एक भद्र पुरुष था। उसके हृदय में प्रबंधक या प्रमुख होने का अहंकार नहीं था। वह एक सच्चा साधु था। वह लेखक से बड़े प्रेमपूर्वक मिला। लेखक भिखमंगे की वेशभूषा के कारण उससे किसी आदर-सम्मान या स्नेह की अपेक्षा नहीं करता था, परंतु नम्से ने उसके साथ सम्मान और प्रेमपूर्ण व्यवहार किया।

3.उत्तर : हीरा और मोती स्वाभिमानी और स्वामिभक्त बैल थे। वे अपने मालिक झूरी के यहाँ हर दशा में प्रसन्न थे। वे खूब मन लगाकर काम भी करते थे। गया के साथ जाना उन्हें बिलकुल अच्छ इसलिए नहीं लग रहा था, क्योंकि उन्हें लगा कि स्वामी ने उनकी कोई कमी देखकर ही उन्हें गया के हाथों बेच दिया है। उनके मन में रोष था, इसलिए उन्होंने गया के साथ जाना स्वीकार न किया।

4.उत्तर -सालिम अली अपने प्रकृति-प्रेम के चलते खुले संसार में खोज करने निकले थे। वह किसी टापू की तरह एक स्थान पर बँधकर नहीं रहे और न ही पक्षियों के संसार तक सीमित रहे। उन्होंने अथाह असीम सागर की लहरों के समान प्रकृति के प्रत्येक रहस्य और सौंदर्य को छूने का प्रयास किया। प्रकृति में तन्मय होकर उन्होंने प्रकृति के अनेकानेक रहस्य खोजकर अपने अनुभवों का संसार समृद्ध किया।

5.उत्तर : उपभोक्तावाद संस्कृति हमारे जीवन को सूक्ष्म ढंग से परिवर्तित कर रही है। इसके प्रभाव से हमारा चरित्र तक बदलता जा रहा है। हम उत्पादों का प्रयोग करते-करते उनके दास होते जा रहे हैं। हमने अब जीवन का लक्ष्य ही उपभोग को मान लिया है। जीवन में नित नए उत्पादों का प्रयोग और उपभोग ही हमारे जीवन का उद्देश्य हो गया है। इससे रिश्ते-नाते, संबंध हमारे लिए गौण हो गए हैं। हम व्यक्तिकेंद्रित हो गए हैं, केवल स्वार्थ ही हमें लक्ष्य के रूप में दिखता है। इस प्रकार जाने-अनजाने आज के माहौल में हमारा चरित्र बदल रहा है और हम उत्पादों को समर्पित होते जा रहे हैं।